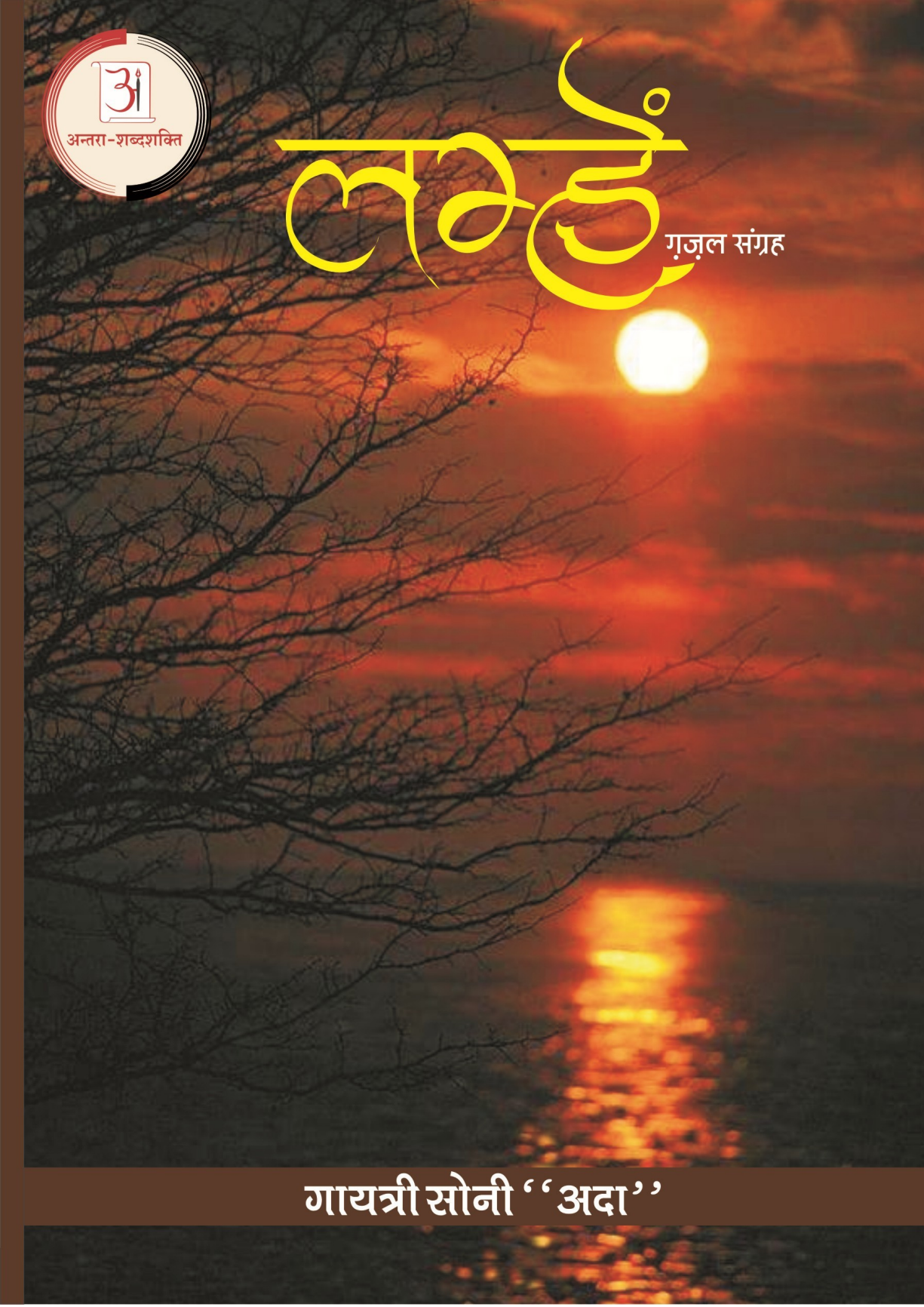
अन्तरा-शब्दशक्ति
लम्हें
ग़ज़ल संग्रह
गायत्री सोनी ''अदा''

लम्हे

(ग़ज़ल संग्रह)

गायत्री सोनी 'अदा'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-014-8"

अन्तरा-शब्दशक्ति

प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र)
४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- गायत्री सोनी 'अदा'
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
LAMHE BY GAYATRI SONI ADA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

लम्हे ज़िंदगी के मित्रो, मेरी मित्र आदरणीया गायत्री जी की पुस्तक लम्हे आपके हाथ में है, इसे हम यूँ कहें ये शब्दों की बुनावट का एक अद्भुत गुलदस्ता आपके हाथ में है पुस्तक का शीर्षक है "लम्हें"।

निश्चित ही कुछ लम्हों से पहर, पहर से दिन और दिन से सप्ताह-माह, वर्ष बनते हैं, जिसमे इंसान की जिंदगी समाहित रहती है, इंसान के दिमाग मे यूँ तो हर पल सतत मंथन चलता रहता है, किन्तु कुछ पल ज़िन्दगी के यादगार पल होते हैं। चाहे वो अच्छे हों, या बुरे उन लम्हों में इंसान पूरा जीवन जीने का माजदा रखता है, लेखक ने अपनी काव्यकृति में उन्ही पलों को समाहित करने का एक सक्षम प्रयास किया है, जिसमे मानवीय संवेदनाओं का उत्कृष्ट समावेश प्रतीकों के द्वारा किया गया है, पुस्तक में देखने को मिलेगा कि एक लम्हे में मन मे उठते विचारों के अंतर्द्वंदों में संलिप्त होकर अहसासों को तड़प, तपन, की आँच पर जब उबाला जाता है, तब कहीं एक ग़ज़ल की परिणिति होती है, जहाँ ग़ज़लों में वेदना, संवेदना, मिलन, विरह, उल्लास, उत्साह, है वहीं प्रकृति, जमीन, आकाश,

समंदर, चाँद, तारे, सूरज को लेखनी के द्वारा लम्हें में समेटने का प्रयास किया गया है।

आकाश भर शुभकामनाओं के साथ

राजेश श्रीवास्तव "प्रखर"

कटनी मध्यप्रदेश

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	पहले पहले प्यार का	7
2.	इशारे	8
3.	मौसम	9
4.	ख़ुदा का नूर	10
5.	बरसों से	11
6.	इनकार	12
7.	जान न ले	13
8.	मेरे हमसफ़र	14
9.	आसान नही	15
10.	शिक़वा	16
11.	मत करना	17
12.	सदा	18
13.	नज़र	19
14.	साथ	20
15.	मुंडेर	21
16.	कहानी... जिंदगी के गम	22
17.	प्यार का मौसम	23
18.	क़दम पर इम्तहाँ	24

19. बच्चों की मस्तियाँ 25
20. नहीं है इश्क़ करना खेल यारो 26
21. महकी कली रातभर 27
22. बसे हो तुम मेरी सांसों में 28
23. हादसा 29
24. आँख भर आई 30
25. रिश्ता था 31
26. रंगी चूनर वो धानी 32

पहले पहले प्यार का

सुरूर है नया-नया, बुख़ार है नया अभी।
पहले-पहले प्यार का, करार है नया अभी।

सुनो ये राहे इश्क़ है, संभालना लगाम को,
गिरे न बेसबब कहीं, सवार है नया अभी।

अभी है रात भी जवां, है चाँदनी शबाब पे
जो धड़कनों में बज रहा, सितार है नया अभी

अभी तो करवटों में ही, कटेगी रात भी कहीं,
सुकूने-कल्ब में निहाँ, ग़ुबार है नया अभी।

बता रहा चलन तेरा, तेरा गुरूर कह रहा,
तेरा अमीर लोगों में, शुमार है नया अभी।

हुनर भी रख जमीर में, लचकने का शऊर हो,
कहीं फिसल न जाये तू, दयार है नया अभी।

नज़र की मयकशी सरापा, रूह तक उतर गई,
चढ़ा है रंग इश्क़ का, निखार है नया अभी।

यहाँ खुशी के भेष में, गमों के शाहकार हैं,
खरीद देख भाल के, बजार है नया अभी।

लबों की कपकपी 'अदा', ये आरिजों की सुर्खियाँ,
बता रहीं है शोखियाँ, निखार है नया अभी।

इशारे

वक़्त बेवक्त छत से इशारा न कर,
हो चुके हैं पराये पुकारा न कर।

हैं ये मजबूरियाँ बेवफाई नहीं,
अब मुझे बेवफ़ा कह पुकारा न कर।

राह जीने की मिल जाएगी और भी,
हारकर ज़िन्दगी से किनारा न कर।

तेरे माफ़िक चले ज़ीस्त मुमकिन नहीं,
यूं हवस से खुशी का खशारा न कर।

बाद गम के, सुनहरी सहर आएगी,
होके मायूस ऐसे निहारा न कर।

शौक़ तुझको है गर तेज़ रफ़्तार का,
टूटी कश्ती नदी में उतारा न कर।

मिलके, आ हम मुहब्बत बिखेरें 'अदा',
रंगों बू में हमारा तुम्हारा न कर।

मौसम

ये अब्र जैसे पिघल रहा है,
न जाने दिल क्यों मचल रहा है।

ज़रा-ज़रा दिल लगा बहकने,
ज़रा- ज़रा सा संभल रहा है।

न देखो ऐसे झुका के नज़रें,
कि दिल हमारा निकल रहा है।

चलो मुहब्बत के गीत गाऐ,
सुना है मौसम बदल रहा है।

बदलता है वक़्त हर किसी का,
किसी का कब आज, कल रहा है।

बहुत है मुश्किल उसे समझना,
जो देखने में सरल रहा है।

नदी चली है उसी से मिलने,
तभी तो सागर उछल रहा है।

जो ख़ुदका चेहरा बदल न पाया,
वो आइने को बदल रहा है।

'अदा' मुहब्बत कहेंगे उसको,
जो ख़्वाब आँखों मे पल रहा है।

ख़ुदा का नूर

एक दीप जब हवाओं से लड़ता दिखाई दे,
मुझको खुदा के नूर का जलवा दिखाई दे।

लगने लगा है झूठ का मज़मा सदा यहाँ,
सच अब तो इस जहान में बिकता दिखाई दे।

रोती हुई लगे है ये कुदरत भी साथ में,

रोता हुआ अगर कोई बच्चा दिखाई दे।

अपनों के रंजोग़म कभी दुनियाँ की उलझनें,
हर शख़्स भीड़ में बहुत तन्हा दिखाई दे।

बाज़ी जहाँ में सब जो सदा जीतता रहा,
अपनों की जंग में ही वह हारा दिखाई दे।

मुश्किल पलों मे जिसने दिखाया है रास्ता,
हर सिम्त उस ख़ुदा का ही जलवा दिखाई दे।

हँसते है ज़ख्म दिल के ये मेरी वफ़ा पे जब,
मेरा वजूद मुझमे सिमटता दिखाई दे।

जब से मिला वो हसरतें होने लगी जवां,
मदमस्त सा नशा कोई चढ़ता दिखाई दे।

विकराल हो चली ये नफ़रत की आग फिर,
अब शह्र भर में हर कोई सहमा दिखाई दे।

तन्हाइयों ने जब से लगाया गले 'अदा',
हर ग़म गले से प्यार से मिलता दिखाई दे।

बरसों से

दर्द का एक समंदर है कई बरसों से,
एक तूफान सा अंदर है कई बरसों से।

ठोकरें खाईं हैं इतनी कि, अब ये लगता है,
ज़िस्म बेजान सा पत्थर है कई बरसों से।

है ख़ुशी कोई न गम है न किसी से शिकवा,
दिल मेरा मस्त कलन्दर है कई बरसों से।

मेरी आँखों में अगर देख सको तो देखो,
इक बियाबान सा मंज़र है कई बरसों से।

ये मुहब्बत के ही फूलों का करिश्मा है अब,
रूह खुशबू से मुअत्तर है कई बरसों से।

सो गया जीत के हर जंग ज़िन्दगी की जो,
दस्तानों में सिकन्दर है कई बरसों से।

हमने जो साथ गुजारा था कभी, देख 'अदा',
पल वही आज भी बेहतर है कई बरसों से।

इनकार

हमको भी मुहब्बत है, ये इज़हार करेगें,
ये किसने कहा आपसे, हम प्यार करेगें।

मालूम हमे भी तो है अंजामे मुहब्बत,
हम अपना तमाशा सरे बाज़ार करेंगे?

नाशाद करे याद जो उसकी तो करें क्या,
हम ज़ीस्त को अपनी बड़ी दुश्वार करेंगे।

जो राह मंज़िल से करे दूर हमे तो,
उस राह पे जाने से ही इनकार करेंगे।

माना कि परिन्दों को पकड़ना नहीं आसाँ,
है ज़िद पे 'अदा' इनको गिरफ़्तार करेंगे।

जान न ले

यूं खफ़ा होके मेरी जान न ले,
मान जा और इम्तहान न ले।

लाज़मी इश्क़ में है झगड़ा भी,
बात इतनी भी दरम्यान न ले।

टूट जाये न राबता दिल का,
इतनी ऊँची अभी उड़ान न ले।

माना जीने का है सबब तू ही,
इसके बदले मेरा इमान न ले।

में अभी हूँ नशे में उल्फ़त की,
होश आने तलक बयान न ले।

हो जहाँ तीरगी के साये ही,
उस गली में कभी मकान न ले।

साथ चलना है दूर तक हमको,
थाम ले हाथ को, थकान न ले।

मेरे हमसफ़र

कहीं तीरगी के हैं मरहले, कहीं रोशनी की बहार है।
कहीं रंजो गम की हैं बारिशें, कहीं नेअमतों की क़तार है।

तेरी आरजू तेरी जुस्तजू, है नज़र में भी मेरी तू ही तू।
मेरे जेहनो दिल मे उतर गया, ये तेरी नज़र का ख़ुमार है।

मेरी आस तुझसे है हमनवा, मेरी ज़ीस्त का है मक़ाम तू।
है ख़ुदा से मुझको तू कम नहीं, मेरी जान तुझपे निसार है।

मिला दर्द मेरा नसीब है, यही दर्द मेरी दवा भी है,
मेरे हमसफ़र तेरा प्यार ही, मेरे दिल जिगर का क़रार है।

तेरा अक्स मेरी निगाह में तेरा नाम मेरी जुबाँ पे है,
तेरे सजदे में है झुकी हुई, मेरी रूह की तू पुकार है।

आसान नहीं

तुम मेरी वफाओं का इतना तो सिला देना,
इस राहे मुहब्बत में हरगिज न दग़ा देना।

आँखों से पिलाकर मय जो दर्द जगाया है,
सीखा है कहाँ ज़ालिम शोलों को हवा देना।

भूले हैं नहीं हम भी, भूले हैं नहीं वो भी,
उन वस्ल की रातों को आँखों में बिता देना।

जो दूर हुये हमसे कब भूल उन्हें पाते,
आसान नहीं होता रिश्तों को भुला देना।

दस्तूर ज़माने का हर शै में है समाया,
आसान नहीं सच्चा किरदार निभा देना।

है धर्म से भी बेहतर चाहत के निवाले दो,
रोते किसी बच्चे को अच्छा है खिला देना।

है वक़्त अगर मुश्किल ये बीत भी जाएगा,
उम्मीद के पंछी को दिल से न उड़ा देना।

शिक़वा

ज़िन्दगी से जब कभी शिकवा किया,
जख़्म दिल का और भी गहरा किया।

दिल को मेरे तोड़ कर जाना न था,
खैर तुमने जो किया अच्छा किया।

दो क़दम ही दूर थी मंजिल मगर,
और किस्मत ने वहीं धोखा किया।

फिर मिलेंगे यह न था वादा मगर,
उम्र भर वह रास्ता देखा किया।

था बड़ा मासूम दिल तो आ गया,
इश्क़ तो हमने मगर सच्चा किया।

तिश्नगी भी कम न थी कुछ उन दिनों,
प्यास ने सागर को भी क़तरा किया।

फिर न जाएंगे कभी उनकी गली,
अब 'अदा' खुद से यही वादा किया।

मत करना

किसी से झूँठा कोई भी क़रार मत करना,
निभा सको न अगर तुम तो प्यार मत करना।

करम ख़ुदा का है ये इश्क़ इक इबादत है,
फ़रेब करके इसे शर्मसार मत करना।

खुला है तौबा का दर, कह दो जो भी कहना है,
ग़मों का अपने कभी इश्तहार मत करना।

हो दोस्ती या मुहब्बत कि रिश्तेदारी हो,
हुसूले दर्द कभी बेशुमार मत करना।

खड़ा है लौट के वापिस उसी किनारे जो,
गया था कह के मेरा इंतिज़ार मत करना।

तेरा ज़मीर ही तेरी अना का हासिल है,
गिरा के इसको कभी दाग़दार मत करना।

हरिक निगाह मसीहा हो ये जरूरी नहीं,
यूं अजनबी पे कभी एतबार मत करना।

है रिश्ता ख़ाक का इनसे इन्हें निभाये जा,
गमों को दिल पे कभी अपने बार मत करना।

कोई तो हिस जो ये कहती है आज मुझसे 'अदा',
हसीन रुत पे कभी एतबार मत करना।

सदा

सदा आख़िर ये किसकी आ रही है,
दबी दिल की जो यूँ भड़का रही है।

उबर पाया था गम से दिल जरा सा,
ये आहट किसकी दर खटका रही है।

हवा तो थी मुख़ालिफ़ ही अभी तक,
तेरी आमद से मन महका रही है।

निराशा की घनी जो तीरगी थी,
तुम्हें देखा तो वापिस जा रही है।

ज़िगर में कुछ तो पिन्हा है तुम्हारे,
मिलाते नैन जो घबड़ा रही है।

असर किसकी दुआओं का है मुझपे,
कज़ा भी दूर से मुस्का रही है।

बहुत तड़पे 'अदा' फुरकत में जिसकी,
उसी की याद दिल बहला रही है।

नज़र

ये कैसा जहाँ है, ये कैसी डगर है,
मकां ही मकां हैं नहीं कोई घर है।

कली जो भी खिलती दिखे ग़मज़दा सी,
लगी इस गुलिस्तां को किसकी नजर है।

बहाता है खूं आदमी-आदमी का,
बना आज इंसान क्यों जानवर है।

गमों का है मज़मा यहाँ हर क़दम पर,
बड़ा ही कठिन ज़िन्दगी का सफ़र है।

न आये सुकूँ और न ही चैन दिल को,
मुहब्बत का कैसा हुआ ये असर है।

कभी याद आयी कभी आयी हिचकी,
यही सिलसिला बस चला रातभर है।

जुनूने मुहब्बत का अंजाम देखो,
हुई ज़िन्दगी अश्क़ से तरबतर है।

'अदा' आज गुज़रे जो उनकी गली से,
मिला छोड़कर बस उसे हर बशर है।

साथ

क़दम से तुम क़दम मेरे मिलना भूल मत जाना,
भटकने जब लगूं पथ से बताना भूल मत जाना।

दुखों से हारकर तुम मुस्कुराना भूल मत जाना,
यही तो अपने साथी हैं निभाना भूल मत जाना।

अभी तो ज़िन्दगी में और दुर्गम रास्ते होंगे,
क़दम भी लड़खड़ाएंगे सँभलना भूल मत जाना।

थकान से हारकर जब ज़िन्दगी के, पास आऊँ मैं,
मुझे बाहों के साये में छुपाना भूल मत जाना।

निराशा के घने बादल करें मायूँस जब तुमको,
हिर्दय में आस का दीपक जलाना भूल मत जाना।

सहारे तेरी यादों के ही अब तो दिन गुजरते हैं,
कहीं भी तुम रहो दिल मे बसाना भूल मत जाना।

जगी है प्यास नैनों में तुम्हारे दर्श की अब तो,
जगा कर प्यास, हिर्दय की बुझाना भूल मत जाना।

मुंडेर

क़ासिद बना कबूतर बैठा मुंडेर पर,
खुश हो के नाजनी ने देखा मुंडेर पर।

हर रात जुगनुओं की बारात वो लिये,
पल-पल था' राह मेरी तकता मुंडेर पर।

लेकर पयाम आया पूरी हुई दुआ,
दिल चाहता है कर लूं सजदा मुंडेर पर।

बादल के झुरमुटों की रंगत हुई जवां,
देखा जो' रात उसका मुखड़ा मुंडेर पर।

था इस कदर दिवाना मेरी निगाह का,
पाने को इक झलक वह बैठा मुंडेर पर।

इक चाँद कोई उतरा जैसे जमीन पे,
देखा जो पास आके ठहरा मुंडेर पर।

आँखों में भरके प्याले जलते शराब से,
यादो से जख्मी' दिल को धोया मुंडेर पर।

जब सामना हुआ था इक रोज़ अय 'अदा',
आलम ठहर गया था सारा मुंडेर पर।

कहानी... जिंदगी के गम

मैं सुनाऊँगी तुम्हें अपनी कहानी फिर कभी,
चाहतों की, हसरतों की मुंहजुबानी, फिर कभी।

मानकर जिसको ख़ुदा, सज़दे किये जी जान से,
एक पत्थर की थी मैं कितनी दीवानी, फिर कभी।

वक्त-ए-रुख़सत जाते जात, ये कभी सोचा न था,
हम कभी ऐसे मिलेंगे नागहानी, फिर कभी।

जब सुलगती आग जैसी पेट में हो भूख की,
किस तरह नीलाम होती है जवानी, फिर कभी।

हैं अभी तो जिंदगी के गम हजारों सामने,
पोंछ देना तुम मेरी आँखों से पानी, फिर कभी।

छोड़कर दामन वफ़ा का मोड़कर मुँह जब गये,
टूटकर बिखरी है कैसे ज़िन्दगानी, फिर कभी।

मुल्तवी कर दे अदालत आज का ये फैसला,
मुझसे सुन लेना ये मेरी सच बयानी, फिर कभी।

जख़्म जो तुमसे मिले वो बन गए नासूर अब,
गर मिले फ़ुरसत दिखा देंगे निशानी, फिर कभी।

दिल ज़िगर ये जान सब कुर्बान तुझ पर ही 'अदा',
वस्ल हो अपना मुक़म्मल आना कानी, फिर कभी।

प्यार का मौसम

कभी वो मुझको वादे से मुकर जाने नहीं देता,
मना लेता है लेकिन रूठकर जाने नहीं देता।

फंसा लेता है अपनी मदभरी बातों से ही अक्सर,
निगाहों से कभी दिल में उतर जाने नहीं देता।

मुझे मेरा मुकद्दर लेके आया है कहाँ जाने,

इधर रहने नहीं देता, उधर जाने नहीं देता।

गजब अंदाज है उसका नजर से कत्ल करने का,
किसी के कान में इसकी खबर जाने नहीं देता।

हरिक लम्हा उसी के ही ख्यालों से महकता है,
जुनूने इश्क़ ये उसका असर जाने नहीं देता।

भला कब तक रखेगा अपने दिल में बांधकर इनको,
तमन्नाओं को खुद से क्यों गुज़र जाने नहीं देता।

भटकता दिल लिये शोले गमे फुरकत के आहों में,
तेरा गम खूब है लेकिन बिखर जाने नहीं देता।

चुनी जाती है दीवारों में उल्फ़त अब भी दुनिया में,
जमाना क्यों किसी को दिल की कर जाने नहीं देता।

'अदा" हर पल सताता है वो बीते वक़्त का मंज़र,
मगर ये प्यार का मौसम ठहर जाने नहीं देता।

क़दम पर इम्तहाँ

खो गया है राबता जाने कहाँ,
फासले बढ़ने लगे हैं दरमियाँ।

हसरतों का शोर भी थमने लगा,
बोलती हैं बेजुबाँ खामोशियाँ।

ज़ख्म दिल के अबतलक हैं टीसते,
और उसपर नोचती तनहाइयाँ।

शहर में कुछ तो हुआ होगा जरूर,
आग के बिन तो नहीं उठता धुआँ।

देख ले ओ बेवफ़ा आके कभी,
किस क़दर वीरान है दिल का मकाँ।

हाल दिल का हम न कह पाये कभी,
और वो समझे न आँखों की जुबाँ।

फिर बचाये कौन कलियों का चमन,
नोचने ख़ुद ही चला जब बागबाँ।

फिर लगा इल्ज़ाम कोई अब नया,
भर चला है ज़ख्म दिल का जानेजाँ।

ज़िन्दगी क्या-क्या पढ़ाती है 'अदा',
हर क़दम पर इम्तहाँ ओ इम्तहाँ।

बच्चों की मस्तियाँ

निकला जो उसकी आँख से ख़ंजर उतर गया,
दिल में किसी के इश्क़ का मंज़र ठहर गया।

लाली शफ़क़ की थी या निगाहों की सुर्ख़ियाँ,

शब भर जला जो याद' का लम्हा बिखर गया।

झोंका हवा का छूके जो गुज़रा क़रीब से,
ऐसा लगा कि जिस्म को छूकर शरर गया।

दे चार:गर दवा भी कि कुछ तो सुकूँ मिले,
यह दर्द इश्क़ तो मेरा फिर से उभर गया।

उसको भी अपनी प्यास पे कितना गुमान था,
देखी जो तिश्नगी मेरी सागर उतर गया।

हैरान था वो जमाने की कैफ़ियत,
परछाइयों के शह्र में बच्चा था, डर गया।

कमरे में कैद हो गई बच्चों की मस्तियाँ,
सब पूँछते हैं आज वो बचपन किधर गया।

नहीं है इश्क़ करना खेल यारो

पता कुछ तो चले अब बात क्या है,
खुले मौसम में ये बरसात क्या है।

सिवा इन आसुओं के और मुझको,
मुहब्बत में मिली सौग़ात क्या है।

ये मौसम तो नहीं तन्हाइयों का,
नज़र में हिज़्र की ये रात क्या है।

ख़फ़ा रहता है जाने किस वजह से,
बताता भी नहीं वो बात क्या है।

नहीं है इश्क़ करना खेल यारो,
कि इसमें जीत क्या है, मात क्या है।

खिलौना दिल समझ खेला और तोड़ा,
कभी समझा नहीं जज़्बात क्या है।

चमक दौलत व शुहरत की जहाँ हो,
'अदा' फिर इश्क़ की औक़ात क्या है।

महकी कली रातभर

थी हवा मनचली रातभर,
खूब महकी कली रातभर।

चाँद उतरा जो आगोश में,
मुस्कुराई नदी रातभर।

एक भंवरे की चाहत को ही,
रातरानी खिली रातभर।

नींद आखिर थी ज़िद पे अड़ी,
साथ मेरे जगी रातभर।

ख़त्म होता नहीं सिलसिला
रात रोती रही रातभर।

बसे हो तुम मेरी सांसों में

मिली थी जब नज़र-नजरों से यूँ ही,
चली थी बात फिर बातों में यूँ ही।

इबारत इश्क़ की छोड़ी अधूरी,
सिमटकर रह गई आहों में यूँ ही।

रहे फूलों में जैसे खास खुशबू,
बसे हो तुम मेरी सांसों में यूँ ही।

बहल जाएगा दिल कुछ तो हमारा,
चले आओ कभी ख्वाबों में यूँ ही।

गए थे छोड़ जब सोचा नहीं था,
मिलेंगे दफ़अतन बरसों में यूँ ही।

मुसलसल रात भर रोया है कोई,
गिरी शबनम नहीं कतरों में यूँ ही।

शरारत कुछ हवा भी कर रही है,
खनक आयी नहीं लहरों में यूँ ही।

निहाँ हाथों में गुलचीं के है ख़ंजर,
कली सहमी नहीं बागों में यूँ ही।

'अदा' हो ही गई तुझको मुहब्बत,
चमक आयी नहीं आँखों में यूँ ही।

हादसा

वक़्त से बढ़कर जहाँ में हमनवा कोई नहीं,
बावफ़ा कोई नहीं और बेवफ़ा कोई नहीं।

एक तिनके की तरह पल में इधर, पल में उधर,

ज़िन्दगी में, ज़िन्दगी सा हादसा कोई नहीं।

हो गया मग़रूर कितना आज हर इंसान है,
रखते हैं शीरी जुबां पर राबता कोई नहीं।

हर तरफ परछाइयों का ही मुसलसल शोर है,
सुनने को अपनी सदा अपने सिवा कोई नहीं।

है सफ़र में ज़िन्दगी के सब मुसाफ़िर ही यहाँ,
कारवाँ जाते गुज़र और नक़्श-ए-पा कोई नहीं।

है कज़ा ये ख़ूबसूरत इश्क़ सब कहते जिसे,
मानिये सच इसके जैसा ज़लज़ला कोई नहीं।

चल पड़े मेरे क़दम राहों में दुनिया के मग़र,
आरजू कोई नहीं है, आशना कोई नहीं।

आँख भर आई

आज फिर वक्त सुहाना आया,
याद गुजरा वो जमाना आया।

आरजू जिसकी' सदा करते थे,
प्यार का बन के' फ़साना आया।

आँख भर आई' पलट कर देखा,
अक्स उसका वो' पुराना आया।

खुशनुमा आज लगे हर आलम,
नाच कर झूम तराना आया।

ख्वाब पलको में' सजाये थे जो,
बन के ताबीर दिवाना आया।

टूट कर मै तो' बिखर जाती 'अदा',
गमजदा वक्त भुलाना आया।

रिश्ता था

मिलते रहे सभी से यों फ़ितरत बनी रही,
ताउम्र जिंदगी में ये आदत बनी रही।

यूँ तो दिखावे का हुनर रखते भी है मगर,
खामोशियों से खेलना आदत बनी रही।

उनसे मिले कभी न कोई सिलसिला रहा,
फिर भी उन्ही से क्यों ये मुहब्बत बनी रही।

चलते रहे सफर में न डर धुप छाँव का,
माँ की दुआओं की ये इनायत बनी रही।

भूले नहीं हैं हम तेरी उस बेवफाई को,
दिल पे लगी ये चोट यथावत बनी रही।

कहने को दूर दिल से हुई तन से दूर भी,
रिश्ता था' रूह का ये इबादत बनी रही।

किस रंग में लिखी थी कहानी ये इश्क की,
अश्कों में ढल 'अदा' की इबारत बनी रही।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - गायत्री सोनी 'अदा'
जन्म - 1 जुलाई, (टीकमगढ़ म.प्र.)
माता - श्रीमती शकुंतला सोनी
पिता - श्री श्याम सुंदर सोनी
पति - श्री महेन्द्र सोनी
शिक्षा - एम.ए. (अंग्रेजी)
पता - दतिया (म.प्र.)
संपर्क - 9165342420
कार्यक्षेत्र - गृहणी
विधा - गज़ल, मुक्तक, कहानी एवं छंद मुक्त रचनाएँ
प्रकाशन - एक सांझा गज़ल संग्रह 'गुंजन'
कसक (गज़ल संग्रह)- अंतरा प्रकाशन।
सम्मान - अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-014-8
मूल्य- 60/-